कक्षा में
श्रवण विकलांग बच्चा

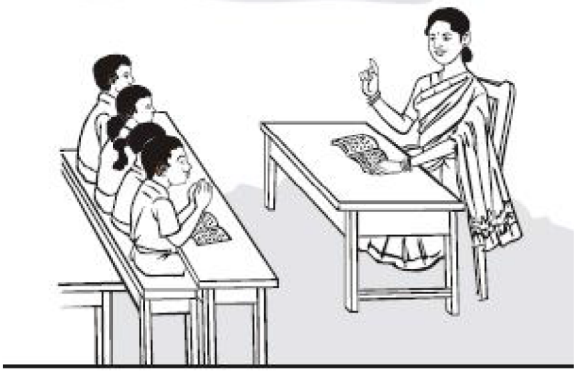

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान
मानसगंगोत्री, मैसूर 570 006

कक्षा में श्रवण विकलांग बच्चा

सीखना ज़्यादातर सुनने पर निर्भर करता है । सीखने में परेशानी अधिकतर सुनने में कमी के कारण हो सकती है । हम चाहते हैं कि बच्चा सुन भी सकें और सीख भी सकें । इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम श्रवण समस्याओं से बाधित बच्चों को पहचानें और उन्हें सहज सुन सकनेवाले अपने हम उम्र बच्चों के जैसे काबिल बनाने में मदद करें ।

श्रवण समस्या में ग्रसित बच्चा:

1. कान बहने या कान से पानी निकलने की, कान में बार बार या उसके आस–पास दर्द की शिकायत कर सकता है ।
2. बोलते समय गलतिया करता है, या तो कुछ अक्षर छोड़ देता है या कुछ अक्षरों को दूसरे अक्षरों में बदल कर बोलता है । जैसे: 'सन' की जगह बच्चा 'टन' या 'अन' कहता है ।

3. प्रश्नों का जवाब नही देता है या गलत जवाब देता है ।
4. नाम से बुलाने पर कोई जवाब नही देता है ।
5. बच्चे के साथ मिलकर खेलते समय और शारीरिक शिक्षा कक्षाओं में जबानी हुक्म का पालन नहीं कर पाता । या तो वह सिर्फ़ दूसरे बच्चों को देखकर आप भी वैसे ही करता है ।
6. दी गयी हिदायतें अथवा पूछे गए प्रश्न दोहराने की मांग करता है ।

7. वह बोलनेवाले के चहरे को देखकर ज्यादा आसानी से समझता है बजाय उसका चेहरा बिना देखे ।
8. बोलनेवाले का चेहरा गौर से देखकर समझने की कोशिश करता है ।
9. सुनकर पहचान नहीं पाते हैं कि कौन बात कर रहा है और आवाज़ कहा से आई ।
10. वह या तो बहुत तेज़ बोलता है अथवा बहुत धीमा ।
11. कक्षा में सुस्त ।
12. श्रुतलेखन जैसे कार्यो में जब ध्यान देकर सुनने की अवश्यकता पड़ती है तो उसे परेशानी सी लगता है ।
13. ऐसा लगता है जैसे वह अनमना हो अथवा उसका ध्यान बट गया हो ।

तो तुरंत व्यावसायिक मदद लेना ज़रूरी है क्योंकि :

1. सुनने में अति निम्न हानि भी बच्चे को कक्षा में बाधा ला सकती है ।
2. समस्याओं की जल्दी ही पहचान और समयानुसार सहायता समस्या को बढ़ने से रोक सकती है ।

बच्चे को शायद मेडिकल सहायता या श्रवणयंत्र की जरूरत है । तब तक आप बच्चे की सहायता निम्नलिखित तरीके से कर सकते है:

1. बच्चे को कक्षा में पहली कतार में बैठाएं । इस तरह से वह अध्यापक के नज़दीक भी रहेगा और पाठ अच्छी तरह सुन पाएगा एवं उनके चेहरे को भी देखकर आसानी से समझ सकेगा ।

2. आपको ये ध्यान रखना होगा कि जब आप कक्षा में कोई महत्वपूर्ण घोषणा कर रहें हों या गृहकार्य दे रहें हों, तब बच्चे का ध्यान आकर्षित कर लें । अगर बोर्ड पर घोषणा लिख दें, तो वह सभी बच्चों के लिए लाभकारी होगी ।

3. अगर जरूरी हो तो, कक्षा के बाद उससे कुछ क्षण बात कीजिए ।

आपकी कक्षा में ऐसा भी विद्यार्थी हो सकता है जो श्रवणयंत्र या तो एक या दोनों कानों में पहनता हो । हम ऐसे बच्चों को उनके विद्यालय के अनुभव को पूर्णरूप से पाने में मदद कर सकते हैं ।

निम्नलिखित कुछ तरीके हैं जिससे आप उनकी मदद कर सकते हैं:

1. ध्यान रहे कि बच्चा श्रवण यंत्र पहनता है । देखिए कि श्रवण यंत्र काम कर रहा है या नहीं और स्विच आन है या नहीं ।
2. जब बच्चा किसी बाहरी क्रीड़ा में हिस्सा ले रहा हो तब उसे श्रवण यंत्र निकालने तथा किसी सुरक्षित जगह पर रखवाने में मदद करें ।
3. दूसरे बच्चों और विद्यार्थियों से विद्यालय में श्रवण यंत्र के बारे में बात करें उन्हें श्रवण यंत्र का काम बताएं, यह भी बताए कि वह कितना नाज़ुक है, और उसे अत्यन्त सावधानी से उपयोग किया जाता है ।

4. याद रखें कि श्रवण दोष स ग्रसित बच्चों को अधिक मेहनत करनी पडती है जिस से वे जल्दी थक सकते हैं। अत: उनका ध्यान बट जाने पर उन्हें दंडित न करें।
5. बच्चे को संगीत में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करें। यह उसे लयबद्ध तरीके से बोलने में सहायक होगा एवं अपनी श्रवण शक्ति का उपयोग करने में भी सहायक होगा।

6. श्रवणयंत्र पहननेवाले बच्चे को इधर–उधर सिर घुमाकर उस विद्यार्थी का चेहरा देखने कि अनुमति दें जो कक्षा में कुछ बोल या पढ रहा हो।
7. बच्चे को और उसके माता–पिता को याद दिलाएं कि वे कान की जाँच हर साल कराए।
8. एक सहपाठी का चुनाव करें जो श्रवण दोष से ग्रसित बच्चे की मदद करें।

9. श्रवण दोष से ग्रसित को पाठयेतर कार्यक्रमों और सामाजिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
10. बच्चे को शोर–गुल के माहौल में बैठने न दें और उसे खिडकी से दूर बैठने दें।
11. महत्वपूर्ण चीज़ों को बोर्ड पर लिख दें। यह सभी बच्चों के लिए सहायक होगा।

आसपास होते हुए शोर गुल से वाक सुनने एवं समझने में परेशानी होती है । कक्षा में शोर गुल का स्तर अगर ज्यादा हो, विद्यालय किसी शोर–शराबो वाले क्षेत्र में स्थित हो , गाडियों का शोर, खेल के मैदान से शोर और दूसरे बच्चों द्वारा किए गए शोर अक्सर कक्षा में सुनने में परेशानी करते है । कक्षा में आगे बैठनेवाले विद्यार्थी जितना सुन सकते है उतना पीछे बैठने वाले विद्यार्थी नहीं सुन पाते है क्योंकि अध्यापक की आवाज पीछे धीमी सुनाई देती है । ऐसी स्थितियों में साधारण विद्यार्थियों को भी सुनने में कठिनाई होती है । वाक को समझना ज्यादा आसान होता है अगर बच्चे अध्यापक को सुनने के साथ साथ उन्हें देख भी सकें ।

निम्नलिखित कुछ तरीके हैं जिससे सुनने में कठिनाई वाली स्थितियों में श्रवण आसान हो सकता है:

1. कक्षा में विद्यार्थियों की ओर देख कर बात करे एवं बोर्ड पर लिखते समय न बोलें ।

2. प्रकाशमय जगह पर खडें हो ।
3. खिडकी या किसी रोशनी स्रोत की ओर पीठ करके खडे न हो, क्योंकि इससे विद्याथियों को आपके चेहरे की गतिविधियों को देखने में कठिनाई होगी ।
4. बोलते समय इधर–उधर न घूमें । यह आपके आवाज़ की सीमा को लगातर बदलते रहेगा । श्रवण दोष से ग्रसित बच्चों को इन स्थितियों में सुनने में बहुत कठिनाई होगी ।
5. बात करते समय अपने मुँह के किसी भी हिस्से को न ढकें, नही तो यह चेहरे की गतिविधियों को दिखने नही देते और बात भी साफ़ सुनाई नहीं देती ।

6. साधारण तरीके से बोलें । जीभ और मुँह के ज्यादा घूमने से वह वाक को समझने में अधिक कठिनाई उत्पन्न कर देते हैं ।

श्रवण दोष से बचने के लिए कुछ तरीके अपनाएँ:

1. अगर किसी बच्चे को कोई सांक्रामिक बीमारी हो (जैसे मम्पस, मीसल्स) तो उसे कक्षा में न आने दें । इससे वह बीमारी फैलेगी नहीं ।
2. बच्चों को कभी भी सिर या कान पर न मारें । बच्चों को कभी भी आपस में झगड़ने न दें । बच्चों को गिरने और अपने सिर को चोट पहुँचाने से बचाएँ। सिर की चोट अक्सर श्रवण दोष का कारण होती है ।

3. बच्चों को सिखाएँ कि वह एक दूसरे के कान में जोर से न चिल्लाएँ । उनको बताएँ कि तेज संगीत न सुने । बच्चों को यह भी बताएँ कि पटाखों की जोर की आवाज़ अक्सर श्रवण दोष का कारण बन जाती है ।
4. अगर कोई बच्चा एसी कोई सांक्रामिक बीमारी से ग्रासित हैं जो श्रवण दोष का कारण हो सकती हैं तो माता–पीता को बच्चे कि श्रवणपरीक्षा जल्दी कराने को कहें । जल्दी पहचान सही कदम उठाने में मदद करेगी और विश्वास देगी कि बच्चा जल्दी दूसरे साधारण बच्चों की तरह बनेगा ।
5. शारीरिक स्वच्छता और साफ–सफाई के लिए प्रेरित करें । यह रोगों को दूर रखने में मदद करेगी ।

हमारा पता:

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान

मानसगंगोत्री, मैसूर 570 006

दूरभाष: (0821) 2514449 / 2514618 / 2515805 / 2515410 फैक्स : 0821 - 2510515

ईमेल: director@aiishmysore.in; aud_aiish@yahoo.com वेब्साइट: www.aiishmysore.in

कार्य समय: प्रात: 9.00 बजे से सायं 5.30 बजे तक

सोमवार से शुक्रवार, केंद्रीय सरकारी छुट्टी दिनों को छोड़कर